ख़ौफ़ की परछाइयाँ

बर्तोल्ड ब्रेख़्ट



अनुवाद
अमृतराय

प्रकाशक □ हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

नवीन संस्करण □ जुलाई, १९८७

मुद्रक □ पियरलेस प्रिन्टर्स, इलाहाबाद

अनुक्रम

भूमिका

आज से क़रीब चालीस साल पहले जब मैंने इन नाटिकाओं का अनुवाद किया था, तब बर्तोल्ड ब्रेख़्ट मेरे लिए और शायद यहाँ के नाट्यप्रेमी जानकार लोगों के लिए भी एक नया नाम था। तब लड़ाई चल रही थी और जर्मनी के ही एक नाटककार की क़लम से निकली हुई हिटलर-जर्मनी की इन तसवीरों ने अपने तीखेपन और ज़ोर से बरबस मुझे अपनी ओर खींच लिया था। आज बर्तोल्ड ब्रेख़्ट इस युग का सबसे बड़ा नाटककार माना जाता है। कुछ नाट्य-मर्मज्ञों ने तो उसे दूसरा शेक्सपियर तक कहा है। आप लोग जो इन छोटी-छोटी नाटिकाओं को पढ़ेंगे, इनके कथ्य और शिल्प दोनों में बर्तोल्ड ब्रेख़्ट की महान् कला के सभी गुण पायेंगे।

हिटलर-जर्मनी आज नहीं है, लेकिन विश्व-पूँजीवाद, जिसका नेता अमरीका है, अपने वर्ग-स्वार्थों से प्रेरित होकर एक बार फिर उन्हीं फ़ाशिस्त तत्वों को बड़े ज़ोरों से उभार रहा है, जिनका प्रतिनिधित्व उस समय हिटलर ने किया था। एक बार फिर वही अंधा युद्धोन्माद, वही बर्बरता तेज़ी से सर उठा रही है और दुनिया विनाश के कगार पर आ खड़ी हुई है। फ़ाशिज़्म और युद्ध एक ही सिक्के के चित-पट हैं, और आज उस सिक्के का नाम डॉलर है। डॉलरी कूटनीति सभी देशों में, जहाँ-जहाँ उसकी घुस-पैठ हो पाती है, अपने इसी कुचक्र को फैला रही है। इसी अर्थ में हिटलर मर के भी नहीं मरा है, और इसी अर्थ में इन नाटिकाओं की युगीनता आज भी ज्यों की त्यों बनी है। लोकमंगल के लिए जन-मानस को उद्‌बुद्ध और क्रियाशील करने के क्रान्तिकारी उद्देश्य से ही इन नाटिकाओं का सृजन हुआ था, और उसी प्रेरणा से आज इस पुस्तिका के नये-नये संस्करण बराबर निकलते रहे हैं।

अमृतराय

घर का भेदी

[बरसात की एक इतवार की दुपहरी खाने के बाद, पति पत्नी और लड़का। नौकरानी अन्दर आती है।]

नौकरानी : श्रीमान और श्रीमती क्लिमबिट्श जानना चाहते हैं कि आप घर पर हैं या नहीं ?

पति : [तीखी आवाज में] नहीं।

[नौकरानी बाहर जाती है।]

पत्नी : तुम्हें खुद टेलीफ़ोन का जवाब देना चाहिए था। उन्हें मालूम है कि हम इतनी जल्दी कहीं नहीं जा सकते।

पति : क्यों नहीं जा सकते ?

पत्नी : क्योंकि बारिश हो रही है।

पति : यह कोई वजह नहीं है।

पत्नी : हम कहाँ जा सकते हैं, यह सवाल वे फ़ौरन अपने आप से पूछेंगे।

पति : पचासों जगहें हैं जहाँ हम जा सकते हैं।

पत्नी : तो फिर हम लोग जाते क्यों नहीं ?

पति : कहाँ ? यह भी तो सुनूँ ?

पत्नी : अगर बारिश न हो रही होती ?

पति : अगर बारिश न भी हो रही होती तो भी हम लोग आख़िर कहाँ जाते हैं ?

पत्नी : पहले लोगों से मेल-मुलाक़ात के लिए तो जा सकते थे।

[ख़ामोशी]

पत्नी : टेलीफ़ोन का जवाब न देकर हमने अच्छा नहीं किया।

अब वह इस बात को समझ जायँगे कि हम उनसे नहीं मिलना चाहते।

पति : समझ जाने दो, हमारे ठेंगे से।

पत्नी : यह अच्छा नहीं मालूम पड़ता कि हम भी ऐसे वक्त में उनसे किनारा करें जब सभी ऐसा ही कर रहे हैं।

पति : हम उनसे किनारा तो कर नहीं रहे हैं।

पत्नी : तो फिर उनको यहाँ आने क्यों नहीं देते ?

पति : क्योंकि इस क्लिमबिट्श के बच्चे से मुझे बड़ी ऊब मालूम पड़ती है।

पत्नी : पहले तो तुम्हें उससे ऊब नहीं मालूम पड़ती थी।

पति : पहले ! यह हर वक्त अपने 'पहले' का किस्सा छेड़कर मुझे मत तङ्ग किया करो।

पत्नी : जो हो। इतना तय है कि पहले तुम उससे मिलने से केवल इसलिए नहीं इनकार कर सकते थे कि स्कूल निरीक्षण बोर्ड ने उसके ऊपर मुक़दमा दायर कर दिया है।

पति : तो तुम्हारा कहने का मतलब है कि मैं कायर हूँ !

[ख़ामोशी]

पत्नी : अच्छा तो उन्हें टेलीफ़ोन करके बतला दो कि बारिश की वजह से हम लोग अभी लौट आये हैं।

[पत्नी बैठी रहती है]

पत्नी : मैं लेम्कूस से यहाँ आने के लिए कह दूँ ?

पति : जिसमें वे यहाँ आकर हमें बतायें कि हम हवाई बेड़े में काफ़ी दिलचस्पी नहीं लेते ?

पति : [लड़के से] क्लॉज़स हेनरी, ख़ुदा के वास्ते रेडियो बन्द करो।

[लड़का अख़बार देखने लग जाता है]

पति : कितनी मुसीबत की बात है कि आज पानी बरस रहा है। लेकिन ऐसे मुल्क में रहा भी तो नहीं जा सकता, जिसमें पानी बरसना एक मुसीबत की बात हो।

पत्नी : इस तरह की बातें बकना अक्लमन्दी है ?

पति : अपने घर की चहारदीवारी में मैं जो चाहे कह सकता हूँ। अपने ही घर में मैं किसी को अपना मुँह नहीं बन्द करने दे सकता...

[नौकरानी कॉफ़ी लेकर अन्दर आती हैं। जब तक वह कमरे में है, ख़ामोशी छायी रहती है।]

पति : क्या हमारे लिए ऐसी नौकरानी रखना जरूरी है, जिसका बाप ब्लॉक वार्डेन हो ?

पत्नी : मेरा ख़याल है हम लोग इस बात पर काफ़ी बहस कर चुके हैं। आख़िरी जो बात हमने कही थी वह यह थी कि ऐसी नौकरानी रखने के फ़ायदे भी हैं।

पत्नी : अपनी माँ से मैं जो कुछ कहती हूँ...

[नौकरानी कॉफ़ी लिये हुए फिर अन्दर आती है]

पत्नी : सब चीज़ें यहीं छोड़ दो, एरना। मैं सब ठीक कर लूँगी। तुम जा सकती हो।

नौकरानी : धन्यवाद, श्रीमती जी ! [जाती है]

लड़का : (अखबार पर से आँख उठाते हुए) पापा, क्या तमाम पादरी ऐसा ही करते हैं ?

पति : क्या ?

लड़का : यही जो यहाँ लिखा है।

पति : तुम पढ़ क्या रहे हो आख़िर ?

लड़का : हमारे दल-नायक ने हमसे कहा है कि हमें अख़बार की सारी बातें जाननी चाहिए।

[वह उसके हाथ से अखबार छीन लेता है।]

पति : तुम्हारे दल-नायक का कहना मेरे लिए क़ानून नहीं है। तुम क्या पढ़ो, क्या न पढ़ो, यह मेरे तै करने की चीज़ है।

पत्नी : क्लॉज़स हेनरी, ये दस फ़ेनिंग लो और अपने लिए, जो मन में आये, ख़रीद लो।

लड़का : लेकिन पानी बरस रहा है।

[अनिश्चय की बेचैनी से वह खिड़की के पास इधर-उधर करता रहता है।]

पति : अगर वे पादरियों के मुक़दमों की ख़बरें छापना बन्द नहीं करते तो मैं अख़बार लेना बन्द कर दूँगा।

पत्नी : और आख़िर लोगे कौन-सा अख़बार? सभी में तो यही ख़बरें रहती हैं।

पति : अगर सभी अख़बारों में ऐसी गन्दगी रहती है तो मैं अख़बार पढ़ना बन्द कर दूँगा। जहाँ तक यह जानने की बात है कि दुनिया में कहाँ क्या हो रहा है, मेरा कोई ख़ास नुकसान न होगा, यह मैं जानता हूँ।

पत्नी : इसमें तो कोई बुरी बात नहीं कि वे सफ़ाई करते हैं।

पति : सफ़ाई! यह तो सरासर राजनीति है, बस।

पत्नी : ख़ैर जो हो, इससे हमारा तो कुछ आता-जाता नहीं, हम प्रोटेस्टेंट हैं।

पति : मगर लोगों के लिए तो यह महत्वहीन बात न होगी कि उनके दिमाग़ में धर्म हमेशा के लिए गन्दगियों के साथ जोड़ दिया जाय।

पत्नी : तो ऐसी हालत में आख़िर उन्हें क्या करना चाहिए?

पति : क्या करना चाहिए! मान लो, वे एक बार अपने ही मकान की सफ़ाई करें! ब्राउन हाउस में भी तो सब पाक-साफ़ नहीं हैं, जहाँ तक मैं जानता हूँ।

पत्नी : लेकिन कार्ल, इससे तो हमारे राष्ट्र के स्वास्थ्य का ही पता चलता है।

पति : स्वास्थ्य! ख़ूब स्वास्थ्य है यह भी। अगर यही स्वास्थ्य हो तो मैं बीमारी पसन्द करता हूँ।

पत्नी : तुम आज बहुत चिड़चिड़े हो रहे हो। स्कूल में कुछ हुआ है क्या?

पति : स्कूल में क्या होता? और बराय मेहरबानी मुझे हरदम यह मत कोंचती रहा करो कि मैं चिड़चिड़ा हो रहा हूँ। क्योंकि यही कोंचना आदमी को सबसे ज़्यादा चिड़चिड़ा बना देता है।

पत्नी : हमें हरदम न झगड़ते रहना चाहिए कार्ल। पहले...

पति : मैं इसी का इन्तज़ार कर रहा था.........पहले ! मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे का दिमाग़ ख़राब किया जाय। मैं न तो पहले ही यह चाहता था, न अब चाहता हूँ।

पत्नी : लेकिन वह गया कहाँ ?

पति : मैं क्या जानूँ ?

पत्नी : तुमने उसे जाते देखा ?

पति : नहीं ?

पत्नी : समझ में नहीं आता कहाँ चला गया। (**पुकारती है**) क्लॉज़स हेनरी !

[**लड़के को आवाज देती हुई वह कमरे के बाहर जाती है और लौट आती है।**]

पत्नी : वह सचमुच चला गया।

पति : क्यों न जाता ?

पत्नी : मूसलाधार पानी बरस रहा है।

पति : लड़के के कभी-कभी बाहर चले जाने से तुम आख़िर इतना घबरा क्यों जाती हो ?

पत्नी : हम लोग किस चीज़ के बारे में बात कर रहे थे ?

पति : उसका इससे क्या ताल्लुक़ ?

पत्नी : इधर तुम्हारा क़ाबू अपने ऊपर नहीं रह गया।

पति : मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि तुम्हारा यह कहना ग़लत है कि अपने ऊपर मेरा क़ाबू नहीं रह गया है। लेकिन अगर ऐसा हो भी तो इसका लड़के के चले जाने से क्या ताल्लुक़ ?

पत्नी : तुम अच्छी तरह जानते हो कि वे कान लगाये सुनाते रहते हैं।

पति : तब ?

पत्नी : वह अगर दूसरे से यही बातें कहे ? तुम तो खुद जानते हो कि कैसी बातें वे नौजवानों के दिमाग़ में ठूँसते रहते हैं। उनसे हर चीज़ की रिपोर्ट देने को कहा जाता है। अजब बात है कि वह इतने चुपके से खिसक गया।

पति : क्या ?

पत्नी : तुमने उसे बाहर जाते नहीं देखा ?

पति : काफ़ी देर तक वह खिड़की के पास बेचैनी से टहल रहा था।

पत्नी : मैं जानना चाहती हूँ कि उसने हम लोगों की कितनी बातें सुनीं ?

पति : मगर वह यह तो जानता ही है कि रिपोर्ट होने पर लोगों के साथ कैसा सलूक किया जाता है।

पत्नी : तुम्हें उस लड़के का क़िस्सा नहीं मालूम जिसके बारे में शुल्क्स ने हम लोगों को बताया था ? सुना जाता है कि उसका बाप अब भी कैंप में है। काश कि हम जानते वह कब गया !

पति : यह सब बेकार की बात है।

[वह दूसरे कमरे में दौड़कर लड़के को पुकारता है।]

पत्नी : मैं तो सोच भी नहीं सकती कि वह बग़ैर किसी से कुछ कहे यों चला भी जा सकता है। वैसा लड़का नहीं है वह।

पति : मुमकिन है वह अपने स्कूल के किसी दोस्त से मिलने गया हो ?

पत्नी : उस सूरत में वह मुमरमान के यहाँ ही हो सकता है। मैं टेलीफ़ोन करती हूँ।

[टेलीफ़ोन करती है]

पति : मेरी समझ में हम लोग नाहक़ ही इतने डरे हुए हैं।

पत्नी : [टेलीफ़ोन पर] मैं हूँ, फ्राउ फुर्क। आप अच्छी तो हैं फ्राउ मुमरमान ? क्लॉज़स हेनरी आपके यहाँ तो नहीं है ? नहीं ? मालूम नहीं कहाँ चला गया वह लड़का। आप मुझे यह बतला सकती हैं फ्राउ मुमरमान कि हिटलर यूथ की मीटिंगों का कमरा इतवार को तीसरे पहर खुला रहता है या बन्द ? हाँ ? बहुत शुक्रिया। वहाँ पता लगाने के लिए मैं उन्हें फ़ोन करूँगी।

[वह टेलीफ़ोन रख देती है। दोनों ख़ामोश बैठे रहते हैं।]

पति : उसने सुन भी क्या लिया होगा, आख़िर ?

पत्नी : क्या तुमने अख़बार के बारे में बात की थी ? ब्राउन हाउस के बारे में तुम्हें वह बात न कहनी चाहिए थी। राष्ट्रीय चीज़ों के खिलाफ वह कुछ नहीं सुन सकता।

पति : ब्राउन हाउस के बारे में तुम्हारी समझ में मैंने क्या कहा ?

पत्नी : तुम भूल गये होगे। यही कि वह जगह ऐसी नहीं है जहाँ हर चीज पाक-साफ़ हो।

पति : तो फिर इसे कोई आलोचना थोड़े ही कह सकता है। मैंने 'सब चीज़ पाक-साफ़ नहीं है' नहीं कहा बल्कि संशोधित करके मैंने कहा 'सब चीज एकदम पाक-साफ़ नहीं है।' दोनों में अन्तर है। और ख़ासा बड़ा अन्तर है। वह एक सस्ती सी, चलती हुई बात है। बोलने का लहजा कह लो। इसका मतलब तो सिर्फ़ यह है कि वहाँ भी कुछ चीजें ऐसी हैं जो हमेशा और हर हालत में ऐसी नहीं होतीं जैसे कि फ्यूरेर उन्हें देखना चाहता है। साथ ही मैंने जान-बूझकर इस बात पर ज़ोर दिया कि मैंने जो बात कही है वह एक सन्देह से ज़्यादा कुछ नहीं है। इसी बात पर ज़ोर देने के लिए मैंने, जैसा कि मुझे अच्छी तरह याद है, कहा कि मुझे लगता है कि उस जगह पर सभी चीज़ें एक-दम पाक-साफ़ नहीं हैं। 'एकदम' शब्द का इस्तेमाल अपनी बात का वज़न सँभालने के लिए ही मैंने किया था। 'ऐसा लगता है' न कि 'ऐसा है'। मैं यह कहने की स्थिति में नहीं हूँ कि उस जगह पर ऐसी कोई खास चीज़ है जो कि पाक-साफ़ नहीं है। इसका तो कोई सबूत नहीं है। इंसान की कमज़ोरियाँ होती हैं, इससे ज़्यादा तो मैंने कुछ कहा नहीं और सो भी ज़्यादा से ज़्यादा मुलायम ढंग से, बहुत अगर-मगर के साथ। और मैं ही क्यों एक बार खुद फ्येरर ने इस विषय पर अपनी टीका को मुझसे कहीं ज़्यादा पैने तरीक़े पर सबके सामने पेश किया था।

पत्नी : मैं तुम्हें नहीं समझ पाती। तुम्हें मुझसे तो इस तरह बात करने की कोई जरूरत नहीं है।

पति : काश न होती! मुझे इस बात का ज़रा भी इत्मीनान नहीं है कि तुम खुद बहस की गरमी में घर की चहारदीवारी के अन्दर कही गयी हम लोगों की आपस की बातों को हर ऐरे-ग़ैरे-नत्थू-ख़ैरे से नहीं कहती डोलतीं। मेरी बात को ग़लत न समझना! मेरे कहने का यह ज़रा भी मतलब नहीं है कि तुम अपने पति के ख़िलाफ़ छिछोरी शिकायतें और बदगुमानियाँ फैलाती हो, उसी तरह जैसे कि मैं एक पल के लिए इस बात को नहीं मान सकता कि हमारा लड़का अपने बाप के ही ख़िलाफ़ किसी से कुछ कहेगा। लेकिन दुर्भाग्य की बात तो यह है कि बुरा काम समझ कर भी किया जा सकता है और नासमझी में भी।

पत्नी : अब बन्द करो तुम यह सब ख़ुराफ़ात। दूसरे की परवाह छोड़कर अब तुम्हें खुद अपनी ज़बान पर क़ाबू रखना चाहिए। घंटों से यही याद करते-करते मेरा माथा फटा जाता है कि तुमने हिटलरी जर्मनी में न रह सकनेवाली बात ब्राउन हाउस की चर्चा के पहले कही या बाद में?

पति : मैंने ऐसी कोई बात कही ही नहीं।

पत्नी : तुम तो मुझसे इस तरह बात कर रहे हो जैसे मैं ही पुलिस हूँ। अगर मैं यों परेशान हो रही हूँ तो सिर्फ़ यह याद करने के लिए कि आख़िर लड़के ने हम लोगों को क्या-क्या कहते सुना।

पति : 'हिटलरी जर्मनी' शब्द तो मैं जानता तक नहीं।

पत्नी : और तुमने ब्लॉक वार्डेन को जो गालियाँ सुनायीं और यह कहा कि अख़बारों में तमाम झूठ भरा होता है और अभी-अभी हवाई हिफ़ाज़त के बारे में जो तुमने अपनी राय ज़ाहिर की, वह सब भूल गये? ठीक तो है, वह लड़का एक भी बात ऐसी नहीं सुनता जिसमें किसी न किसी चीज़ को बुरा-भला न कहा गया हो!

ऐसी बातें सुनने से किसी भी नौजवान दिमाग़ को नुकसान छोड़ फ़ायदा थोड़े ही पहुँच सकता है और जब कि फ़्यूरेर बार-बार इस बात पर ज़ोर दे रहा हो कि जर्मनी के नौजवान ही जर्मनी के भविष्य हैं। यह तो ठीक है कि हमारा लड़का ऐसा नहीं है कि भागा-भागा जाय और लोगों से रिपोर्ट करे। इस बात का ख़याल करने से मेरा कलेजा मुँह को आता है।

पति : और जो हो, बदले की भावना उसमें है।

पत्नी : पर आख़िरकार वह किस चीज़ का बदला लेना चाहता है?

पति : कौन जाने। कुछ न कुछ रहता ही है हमेशा। शायद इसीलिए कि मैंने उससे उसका मेंढक छीन लिया था!

पत्नी : लेकिन वह तो एक हफ़्ते की बात हो गयी।

पति : मगर वह ऐसी चीज़ें भूलता नहीं।

पत्नी : तुमने मेंढक उससे नाहक़ क्यों छीन लिया था?

पति : क्योंकि वह उसके लिए मक्खियाँ तो पकड़ता न था, उसे भूखों मार रहा था।

पत्नी : पर उसे और भी तो कितना काम करना रहता है।

पति : इसकी ज़िम्मेदारी क्या मेंढक के ऊपर है?

पत्नी : पर इसके बारे में तो उसने फिर कुछ कहा नहीं और मैंने अभी उसे दस फ़ेनिंग दिये। उसे अपनी ज़रूरत की सब चीज़ें मिल जाती हैं।

पति : मिल तो जाती हैं, पर वह घूस है।

पत्नी : क्या मतलब?

पति : कुछ भी, मगर हद हो गयी! हे परमेश्वर! कैसे वह किसी से इस बात की उम्मीद रखते हैं कि वह नौजवानों को पढ़ाये-लिखाये, आदमी बनाये। मुझे तो नौजवानों से डर लगता है।

पत्नी : पर तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई शिकायत तो है नहीं।

पति : शिकायत हर आदमी के ख़िलाफ़ है, हर आदमी पर शक किया जाता है। यह शक कि 'मुझ पर शक किया जाता है' हड्डियाँ सर्द कर देने के लिए काफ़ी है।

पत्नी : लेकिन यह तो सभी को मानना होगा कि एक ज़रा से बच्चे की गवाही एतबार के क़ाबिल नहीं होती। वह तो अपनी ही बात का मतलब ठीक से नहीं समझ पाता।

पति : यह तो तुम्हारा ख़याल है न? लेकिन कोई बात साबित करने के लिए भला गवाही की ज़रूरत उन्हें कब से पड़ने लगी?

पत्नी : अपनी बातों का और कोई मतलब हम लोग नहीं सोच सकते? क्या यह नहीं हो सकता कि उसने तुम्हारी बात को बिल्कुल ग़लत समझा हो। मेरी बात समझ रहे हो?

पति : मैंने क्या कहा, मुझे तो यह तक याद नहीं। इस सब की वजह यही निगोड़ी बारिश है। इससे तबीयत एकदम मुरझा जाती है। और चाहे जो हो इसमें भी भला किसी को शक हो सकता है कि जर्मन राष्ट्र आज जो आध्यात्मिक उन्नति अनुभव कर रहा है, मैं उसके मूल्य को कम करनेवाली बात कह ही नहीं सकता। मैंने तो सन् ३२ में ही भविष्यवाणी कर दी थी।

पत्नी : कार्ल, उसकी चर्चा का अब समय नहीं है। हमें अपनी कहानी फ़ौरन बना डालनी चाहिए, इसी दम। एक मिनट भी खोने का समय अब नहीं है।

पति : क्लॉज़स हेनरी ऐसा कर सकता है, यह मानने को मेरा जी नहीं करता।

पत्नी : अच्छा तो पहली चीज़ है ब्राउन हाउस और वहाँ की गंदगियाँ।

पति : लेकिन गन्दगियों की तो बात भी मैं ज़बान पर नहीं लाया।

पत्नी : तुमने कहा कि अख़बार में तमाम गन्दगियाँ भरी रहती हैं और तुम उसे लेना बन्द कर दोगे।

पति : हाँ अख़बार में, ब्राउन हाउस में नहीं।

पत्नी : तुम्हारे कहने का मतलब यह भी तो हो सकता है कि

तुम्हें पादरियों की गन्दगियाँ नापसंद हैं। और यह कि ये पादरी जिन पर आज मुक़दमा चल रहा है, असलियत में ब्राउन हाउस के बारे में तरह-तरह की ग़लत बातें फैलाने के लिए ज़िम्मेदार हैं; और यह कि वह जगह बिल्कुल ठीक हो ऐसा नहीं लगता; और यह कि उन्हें घर की सफ़ाई अब तक कर चुकनी चाहिए थी। तुमने लड़के को रेडियो बन्द करके अख़बार लेने के लिए भी तो इसी ख़याल से कहा कि तुम समझते हो तीसरी राइख़ के नौजवानों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि उनके चारों ओर तमाम दुनिया में क्या हो रहा है?

पति : इस सबसे कुछ काम न बनेगा।

पत्नी : कार्ल, तुम्हें इस वक़्त हिम्मत से काम लेना चाहिए। तुम्हें मज़बूत होना चाहिए, जैसा कि लीडर हमेशा...

पति : मैं न्यायालय में कैसे खड़ा हो सकूँगा जब मेरे रक्त-मांस से बना मेरा लड़का ही मेरे ख़िलाफ़ गवाही दे रहा हो।

पत्नी : इस बात पर अब उस दृष्टिकोण से विचार न करो।

पति : क्लिमबिट्श परिवार से किसी प्रकार का सामाजिक सम्बन्ध रखकर हम लोगों ने बड़ी भूल की।

पत्नी : पर उन्हें अब तक तो कुछ हुआ नहीं है।

पति : यह तो ठीक है; मगर उनके ख़िलाफ़ जाँच-पड़ताल तो हो रही है।

पत्नी : अगर वे तमाम लोग जिनके ख़िलाफ़ कभी न कभी जाँच-पड़ताल हो चुकी है, निराश हो जायँ...

पति : तुम्हारा क्या ख़याल है, क्या वार्डेन हम लोगों पर शक करता है।

पत्नी : यानी अगर कोई उससे हमारे बारे में पूछताछ करने आये? उसके जन्म-दिन पर हम लोगों ने उसे सिगार का एक बॉक्स दिया था और नये साल की ख़ुशी में हमने जो रक़म उसे भेंट की थी, वह भी ख़ासी थी।

पति : हमारे पड़ोसी गॉफ़ परिवार ने उसे पन्द्रह मार्क दिये थे।

पत्नी : मगर वे इस सन् '३२ में भी फ़ोरवॉर्ट[1] पढ़ते हैं और मई १९३३ में उन्होंने अपने मकान पर एक काला-सफ़ेद-लाल झंडा टाँगा था।

[टेलीफ़ोन की घंटी बजती है]

पति : फ़ोन।

पत्नी : मैं ले लूँ ?

पति : तुम्हीं जानो।

पत्नी : कह सकते हो फ़ोन करनेवाला कौन है ?

पति : दूसरी बार घंटी बजने तक रुको।

[वे इन्तज़ार करते हैं। फ़ोन की घंटी फिर नहीं बजती।]

पति : हमारी ज़िन्दगी भी क्या है !

पत्नी : कार्ल।

पति : तुमने मेरे लिए विभीषण जना है। वह मेज़ पर बैठा-बैठा अपना शोरबा पीता है और हमारी तमाम बातें सुनता रहता है, और नोट लेता रहता है अपने जन्म-दाताओं की ही बातों का। क्या खूब घर का भेदी है।

पत्नी : तुम्हें ऐसा न कहना चाहिए।

[खामोशी]

पति : तुम्हारा क्या ख़याल है, हमें कुछ तैयारी करनी चाहिए ?

पत्नी : तैयारी करना ही शायद ठीक होगा।

पति : आयरन क्रॉस[2] लगा लेना अच्छा होगा शायद ?

पत्नी : ज़रूर, ज़रूर, कार्ल।

[वह उसे निकालता है और काँपते हाथों से लगाता है।]

पत्नी : लेकिन स्कूल में तो तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई शिकायत नहीं है ?

पति : मैं क्या जानूँ ? वे लड़कों को जो कुछ पढ़ाना चाहें, मैं सब पढ़ाने के लिए तैयार हूँ; मगर आख़िर वे लड़कों को पढ़ाना चाहते क्या हैं, यह भी तो मालूम हो ? काश मुझे हर चीज के बारे में पहले से यह

---

१. जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी का मुखपत्र।

२. हिटलरी राज में वीरता का पदक।

मालूम हो जाता ! अब मैं क्या जानूँ कि वे बिस्मार्क को कैसा बताना चाहते हैं ? उस पर से नयी स्कूली किताबें तैयार करने में जब उन्हें इतनी देर लग रही है। तुम उस नौकरानी को और दस मार्क नहीं दे सकतीं, वह भी हमेशा हमारी बातें सुना करती है !

पत्नी : [सिर हिलाती है] और हिटलर की वह फ़ोटो ? उसे तुम्हारी मेज़ के ऊपर टाँग दूँ ? ज्यादा भली दीखती है।

पति : हाँ, हाँ।

[पत्नी फोटो को स्थानांतरित करने लगती है।]

पति : लेकिन अगर लड़के ने बाद में कहा कि हमने जान-बूझ कर उसकी जगह बदली है, तो इसका मतलब होगा कि हमारे दिल में चोर है।

[पत्नी फ़ोटो को फिर अपनी पुरानी जगह में टाँग देती है]

पति : वह दरवाज़े की आवाज़ थी न ?

पत्नी : मैंने नहीं सुनी।

पति : हाँ वही थी।

पत्नी : कार्ल !

[वह उसकी छाती से लग जाती है]

पति : अपनी तबियत को यों बे-क़ाबू न होने दो। मेरे बैग में कोई-सा अंडरवियर रख दो।

[मकान का दरवाज़ा खड़कता है। पति-पत्नी संत्रस्त और स्तम्भित, कमरे के एक कोने में अगल-बगल खड़े हैं। कमरे का दरवाज़ा खुलता है और लड़का दाखिल होता है। उसके हाथ में काग़ज़ का एक बैग है। ख़ामोशी]

लड़का : क्या हुआ ?

पत्नी : तुम कहाँ थे ?

[लड़का चाकलेट के पैकेट की तरफ़ इशारा करता है।]

पत्नी : तुमने सिर्फ़ चॉकलेट लिये ?

लड़का : और क्या ले सकता था।

[वह चॉकलेट खाता हुआ कमरा पार करता है और

बाहर चला जाता है। उसके माँ-बाप की आँखें कुछ खोजती सी उसका पीछा करती हैं।]

पति : वह सच बोल रहा है क्या ?

[पत्नी कंधा उचकाती है।]

□

चार चित्र

[मज़दूर की कोठरी। एक औरत जिसके दो बच्चे हैं। एक नौजवान मज़दूर दम्पति जो मिलने आये हैं। औरत रोती है। सीढ़ी पर पैरों की आवाज़ सुन पड़ती है। दरवाज़ा खुला है।]

औरत : उसने सिर्फ़ इतना ही तो कहा था कि हम लोगों को इतनी कम मज़दूरी मिलती है कि हमेशा भूखों मरने की नौबत आयी रहती है। और बिलकुल ठीक ही तो कहा उसने। इस बुढ़िया को फेफड़े की बीमारी है और हम लोग इसके लिए दूध तक नहीं ख़रीद सकते। कहीं उन्होंने उसे कुछ कर तो नहीं दिया ?

[नात्सी सैनिक एक बड़ा-सा बकस लाते हैं और उसे फ़र्श पर रख देते हैं।]

नात्सी सैनिक : देखो, किसी किस्म का गुल-गपाड़ा मचाने की कोशिश मत करना। निमोनिया किसी को भी हो सकता है। ये रहे तुम्हारे काग़ज़ात। काग़ज़ात बिल्कुल ठीक हैं। समझाये देता हूँ, कोई बेवकूफ़ी का काम न कर बैठना।

[नात्सी सैनिक चला जाता है।]

बच्चा : अम्माँ, बाबू इसके अन्दर हैं क्या ?

मज़दूर : [बकस को इधर-उधर से देखते हुए] टीन का है।

बच्चा : इसे हम खोल नहीं सकते क्या ?

मज़दूर : [गुस्से में] हाँ, हाँ, क्यों नहीं। औज़ारोंवाला बकस कहाँ है ?

[औजार ढूंढ़ता है। उसकी जवान पत्नी उसे रोकती है।]

पत्नी : मत खोलो, हांस ! सब तुम्हें भी पकड़ लेंगे, बस।

मज़दूर : मैं देखना चाहता हूँ कि उन्होंने उसके साथ क्या किया है। वे डरते हैं कि कोई देख न ले, नहीं यों टीन के बकस में बन्द करके न लाते। मुझे छोड़ दो, मैं देखूँगा।

पत्नी : मैं तुम्हें नहीं खोलने दूँगी। तुमने सुना नहीं, वे क्या कह रहे थे।

मज़दूर : उसे देख तो लें हम लोग, कम से कम। तुम क्या कहती हो ?

औरत : [अपने बच्चे का हाथ पकड़े टीन के बकस तक जाती है] हांस, अभी मेरे एक भाई है जिसे वे पकड़ सकते हैं। वे तुम्हें भी पकड़ सकते हैं। बकस बन्द ही रहने दो। हमें देखने की कोई जरूरत नहीं है। हम उसे भूलेंगे नहीं।

२

[कंसेंट्रेशन कैम्प। बारक की दीवारों के बीच थोड़ी-सी खुली जगह। अभी रोशनी नहीं हुई है। किसी को कोड़े मारे जाने की आवाज़ सुन पड़ती है। फिर एक नात्सी सैनिक एक क़ैदी को कोड़े मारता दिखायी पड़ता है। एक नात्सी सैनिकों का दल-नायक कोड़े मारनेवाले की ओर पीठ किये खड़ा सिगरेट पी रहा है। फिर वह चला जाता है।]

नात्सी सैनिक : [थककर एक पीपे पर बैठ जाता है] अब शुरू करो काम ! [क़ैदी ज़मीन पर से उठता है और अस्थिर शरीर से पाख़ाना साफ़ करने लग जाता है।]

नात्सी सैनिक : सूअर, जब तुमसे सवाल किया जाता है तो यह कहने में तुम्हारा क्या जाता है कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ। तुम्हारी ठोंकाई होती है और मेरा पास छिन जाता है। यह कोई नहीं देखता कि मैं किस बुरी तरह थका हुआ हूँ। वे क्लापरोट को यह काम क्यों नहीं सौंप देते ? उसे तो इसमें बड़ा मजा आता है। अगर वह

बदमाश रंडीबाज फिर बाहर आये [कान लगाकर सुनता है] तो तुम कोड़ा लेकर उससे ज़मीन को पीटने लग जाना। समझे ?

क़ैदी : जी।

नात्सी सैनिक : और यह सब सिर्फ़ इसलिए कि मैं तुम कुत्तों को कोड़े मारते-मारते थक गया हूँ, मेरा मन ख़राब हो गया है। समझे ?

क़ैदी : जी !

नात्सी सैनिक : देखो !

[बाहर पैरों की आवाज सुन पड़ती है और नात्सी सैनिक कोड़े की ओर इशारा करता है। क़ैदी उसे उठा लेता है और ज़मीन को पीटने लग जाता है। चूंकि कोड़ों की फटकार असली मार की तरह नहीं है, इसलिए नात्सी सैनिक पास पड़ी हुई टोकरी की ओर सुस्ती से इशारा करता है, और क़ैदी उसी को पीटने लग जाता है। बाहर पैर की आवाज थम जाती है। नात्सी सैनिक घबड़ाकर झटपट उठ खड़ा होता है, क़ैदी के हाथ से कोड़ा छीनकर उसे मारना शुरू कर देता है।]

क़ैदी : [धीमी आवाज में) पेट पर नहीं।

[नात्सी सैनिक उसे चूतड़ों पर मारता है। उसका दल-नायक अंदर झाँकता है।]

दलनायक : पेट पर मारो।

[नात्सी सैनिक क़ैदी को पेट पर मारता है।]

३

[दो नात्सी सैनिक जाड़े की इमदादी चीजों का एक पैकेट लेकर एक बुढ़िया के मकान में आते हैं। बुढ़िया और उसकी लड़की एक मेज के पास खड़े हैं।]

पहला सैनिक : यह लो, मा, फ्यूरेर ने तुम्हारे लिए भेजा है।

दूसरा सैनिक : अब तुम यह नहीं कह सकतीं कि उसे तुम्हारी फ़िक्र नहीं है।

बुढ़िया : शुक्रिया, शुक्रिया; एर्ना, इसमें आलू हैं। और एक ऊनी जंपर। और सेब।

पहला सैनिक : और फ्यूरेर के पास से एक ख़त, जिसमें कुछ है, खोल के देखो तो जरा !

बुढ़िया : (चिट्ठी खोलती है) पाँच मार्क ! अब कहो एर्ना ?

पहला सैनिक : जाड़े की इमदाद !

बुढ़िया : अब तुम्हें मेरे हाथ से एक सेब खाना ही पड़ेगा बेटा, और तुम्हें भी। क्योंकि तुम्हीं तो तमाम सीढ़ियाँ चढ़कर हमारे लिए ये चीजें लाये। बात यह है कि तुम्हें खिलाने को मेरे पास और कुछ नहीं है। आओ यह साथ-साथ खायें।

[वह एक सेब में मुंह मारती है। लड़की को छोड़कर और सब सेब खाते हैं।]

बुढ़िया : तुम क्यों नहीं खातीं एर्ना, और देखो वैसी रोनी सूरत बनाकर मत खड़ी रहो ! देख ही रही हो कि अब वैसा बुरा हाल नहीं है, जैसा कि तुम्हारा आदमी कहता है।

पहला सैनिक : वह क्या कहता है।

लड़की : वह कुछ नहीं कहता। बुढ़िया फ़िजूल बक रही है।

बुढ़िया : हाँ, कोई खास बुरी बात नहीं। बस यही कहता है, जैसा कि सभी कहते हैं, कि चीजें इधर ज़रा महँगी हो गयी हैं। (सेब से लड़की की ओर इशारा करती है) और इसने खर्चे की कापी से हिसाब लगाकर पता चलाया कि पिछले साल के मुकाबले में इस साल खाने की चीज़ों पर उसे एक सौ तेईस मार्क अधिक ख़र्च करने पड़े। क्यों ठीक है न, एर्ना ! (देखती है कि नात्सी सैनिक उसकी बात पर कुछ नाराज-से दिखायी पड़ते हैं।) मगर इसके लिए आख़िर किया भी क्या जा सकता है जब कि तमाम गोला-बारूद तैयार करना हो, है न ? क्यों, ? मैंने कोई बुरी बात कह दी क्या ?

पहला सैनिक : औरत, तू अपने खर्चे की कापी कहाँ रखती है ?

दूसरा सैनिक : और किन-किन लोगों को दिखाती है ?

लड़की : मैं उसे हमेशा घर ही पर रखती हूँ। मैं उसे किसी

को नहीं दिखाती।

बुढ़िया : ख़र्चे की कापी रखना तो कोई गुनाह नहीं है।

पहला सैनिक : और जो वह तरह-तरह की भयानक कहानियाँ फैलाया करती है, वह भी तो कोई गुनाह नहीं है न ?

दूसरा सैनिक : और यह भी तो है कि जब हम लोग अन्दर आये तो मैंने उसको बहुत खुश होकर हाइल हिटलर कहते नहीं सुना। क्यों, तुमने सुना ?

बुढ़िया : मगर उसने हाइल हिटलर कहा और मैं भी कहती हूँ— हाइल हिटलर !

दूसरा सैनिक : यह मार्क्सवादियों का अच्छा ख़ासा अड्डा मालूम पड़ता है, क्यों ऐलबर्ट ? हमें उस हिसाब की कापी को एक बार ज़रा देखना है और इसलिए तुम ज़रा हमारे साथ तो चलो अपने मकान तक।

[वह लड़की की बाँह पकड़ लेता है।]

बुढ़िया : मगर उसका तीसरा महीना है ! तुम्हारी इच्छा... तुम उसके साथ ? इतने पर भी कि तुम वह पैकेट लाये और हमने तुमसे सेब लिये ? फिर भी ? मैं तुम्हें बतला रही हूँ कि उसने हाइल हिटलर कहा। हाय परमेश्वर, अब मैं क्या करूँ ! हाइल हिटलर। हाइल हिटलर !

[सेब उगल देती है। नात्सी सैनिक लड़की को ले जाते हैं।]

बुढ़िया : [अब भी क़ै करते हुए] हाइल हिटलर !

४

[खेत। रात। सूअर के बाड़े के सामने खड़े होकर किसान अपनी पत्नी और दो बच्चों से कहता है।]

किसान : मैं तुम्हें कभी इसमें नहीं घसीटना चाहता था, मगर तुम चिपकी रहीं और अब तुम्हें अपना मुँह बन्द रखना होगा, नहीं तो तुम्हारा बाप लैंड्सबर्ग जेल पहुँच जायगा और तमाम ज़िन्दगी वहीं सड़ेगा। अपने जानवर को भूख लगने पर हम उसे खाना देते हैं तो

कुछ बुरा तो नहीं करते। परमात्मा भी तो नहीं चाहता कि उसकी सृष्टि में कोई भूखा रहे। इसे भूख लगी नहीं कि लगती है चिल्लाने और मुझे बर्दाश्त नहीं कि मेरी सुअरिया भूख के मारे खेत में चिल्लाये। और वे हैं कि मुझे उसको खिलाने नहीं देते। क़ानून इसके खिलाफ़ है। मगर तब भी मैं उसे खिलाऊँगा, क्योंकि मैं अगर उसे खिलाता नहीं तो वह भी मर जायगी और मुझी को इसका नुक़सान सहना पड़ेगा।

पत्नी : वही तो मैं भी कहती हूँ। हमारा दूध हमारा है और हम उसका क्या करें, क्या न करें, यह बतलानेवाले ये साले कौन हैं? यहूदियों को तो उन्होंने खोज-खोज कर निकाल बाहर किया। पर सरकार तो सबसे बड़ी यहूदी है और पादरी हाइन्ज़ ने हम लोगों से कहा भी तो था : जो बैल तुम्हारे लिए अनाज उपजाता है उसे मारना मत। उन्होंने एक तरह से इशारा किया कि चौपायों को खाना देते जाना चाहिए। कोई हमने तो उनकी चौसाला योजना बनायी नहीं और न किसी ने हमसे उसके बारे में पूछा ही।

किसान : बिलकुल ठीक। न वे किसानों के लिए हैं और न किसान उनके लिए। यह भी अच्छी रही, मैं अपना अनाज उनके हवाले कर दूँ और फिर चारे के लिए खुद ही चढ़ी हुई क़ीमत दूँ और यह सब सिर्फ़ इसलिए कि गुंडे तोपें खरीद सकें।

पत्नी : पादरी हाइन्ज़ कहते हैं : शान्ति से रहो, किताब में यही लिखा है।

किसान : टोनी, तुम ज़रा वहाँ तारों के पास तो खड़े हो जाओ। और मेरी, तुम चरागाह में निकल जाओ। [**और फिर अपने चारों ओर देखता हुआ डरता-डरता बाड़े की ओर जाता है। उसकी पत्नी भी डरी हुई, चारों तरफ़ देखती है।**]

किसान : [**सुअर के आगे सानी पटकते हुए**] तुम मज़े में खाओ लीता। हाइल हिटलर! भाड़ में जाय ऐसी सरकार जिसमें जानवर भूखे रहें।

□

रेडियो का वक्त

[एक कारखाने में शॉप सुपरिन्टेन्डेण्ट का दफ़्तर। एक रेडियो अनाउन्सर हाथ में माइक्रोफ़ोन लेकर एक अधेड़ मजदूर, एक बुड्ढी मजदूरनी और एक कम उम्र मजदूरनी से बातचीत करता है। इन लोगों से पीछे की ओर एक कारखाने का अफ़सर और नात्सी सैनिक की पोशाक पहने एक मोटा-तगड़ा आदमी खड़ा है।]

अनाउन्सर : हम लोग पहियों की गड़गड़ाहट और इधर-उधर आने-जानेवाली चीज़ों की चरमराहट के बीच खड़े हैं। हमारे चारों ओर बहुत जांफ़िशानी से और मन लगाकर काम करनेवाले भाई हैं जो अपनी प्यारी पितृभूमि को ज़रूरत की चीज़ें मुहय्या करने में लगे हुए हैं। आज इस समय सुबह हम फ़ुक्स स्पिनिंग मिल्स लिमिटेड में हैं और गोकि काम मुशकिल और अंग-अंग को थका देनेवाला है तब भी हमारे पास जितने लोग खड़े हैं उनमें सभी के चेहरे पर प्रसन्नता और सन्तोष लहरा रहा है। लेकिन हम अपने साथियों को खुद ही बोलने का मौक़ा देने चाहते हैं। [बुड्ढे मजदूर से] आप इस कारख़ाने में इक्कीस बरस काम कर चुके हैं। क्या नाम है आपका, हर......?

बुड्ढा मजदूर : सडैलमायर।

अनाउन्सर : हर सडैलमायर! यह क्या बात है कि हमें यहाँ प्रसन्न और सन्तुष्ट चेहरे ही दीख रहे हैं?

बुड्ढा मजदूर : [सोचकर] वह हर वक्त आपस में हँसी-दिल्लगी

किया करते हैं।

अनाउन्सर : हाँ, यही बात है। और इसी तरह के हँसी-मज़ाक के वातावरण में काम बहुत सहूलियत से होता है, क्यों? राष्ट्रीय समाजवाद किसी तरह की निराशा का नाम नहीं जानता, तुम्हारे कहने का मतलब यही है न? पहले तो ऐसा कभी नहीं होता था। नहीं होता था न?

बुड्ढा मजदूर : नहीं, कभी नहीं।

अनाउन्सर : तुम्हारे कहने का मतलब है कि वाइमार प्रजातन्त्र[१] के समय में कुछ था ही नहीं जिसमें हर मज़दूर हँसता, ख़ुश होता। तब वे पूछा करते थे हमारे काम का क्या उद्देश्य है?

बुड्ढा मजदूर : हाँ, ऐसे कुछ लोग हैं जो यह कहते हैं।

अनाउन्सर : क्या कहा! ओह, हाँ, तुम्हारा इशारा उन लोगों की तरफ़ है जो हमेशा गड़बड़ मचाये रहते हैं और यहाँ-वहाँ छिटफुट पाये जाते हैं। मगर ऐसे लोगों की तादाद कम ही होती है, क्योंकि हमारे राष्ट्र की बाग-डोर एक बार फिर मज़बूत हाथों में चली जाने से राष्ट्र लगातार उन्नति करता जा रहा है। तुम्हारे कहने का यही मतलब था न? हाँ फ़ाउलाइन, क्या नाम है तुम्हारा……?

मजदूरनी : श्मिट।

अनाउन्सर : फ़ाउलाइन श्मिट। हमारी किस बड़ी लोहे की मशीन पर तुम काम करती हो?

मजदूरनी : [जैसे रटा हुआ पाठ सुना रही हो] और फिर अपने काम की जगह को सजाने का काम भी तो है; हमें बड़ा आनन्द आता है। हमने आपस में चन्दा करके फ़्यूरेर की तस्वीर मँगायी है और हमें अपने जिरेनियम के पौधे पर भी घमण्ड है। उन्होंने कारख़ाने के नीरस वातावरण में जान डाल दी है—यह फ़ाउ-

---

१. हिटलर के आगमन के पहले की पूँजीवादी जनतांत्रिक सरकार।

लाइन किज़ का सुझाव था।

अनाउन्सर : अच्छा तो तुम लोग अपने काम की जगह को खेतों के उन हसीन बच्चों, फूलों से सजा रही हो? जब से जर्मनी की क़िस्मत ने पलटा खाया, तब से कारख़ाने में और भी तब्दीलियाँ हुई होंगी?

अफसर : नहानघर।

मज़दूरनी : नहानघर की बात डिक्टेटर साहब, हर ब्राउश्ल को खुद सूझी और हम उनका शुक्रिया अदा करना चाहते हैं। कोई भी उन खूबसूरत नहानघरों में जाकर नहा सकता है, अगर बहुत ज्यादा भीड़ न हो और आने-जाने का रास्ता ही बन्द न हो जाय।

अनाउन्सर : शायद सभी पहले पहुँचने की कोशिश में रहते हैं। काफी पुरलुत्फ़ ठेल-ठाल रहती होगी, क्यों?

मज़दूरनी : पाँच सौ बावन लोगों के लिए सिर्फ़ छः कमरे हैं। हर रोज़ अच्छा खासा दंगा मचा रहता है। बहुतों को तो उसकी ज़रा-सी परवाह नहीं है।

अनाउन्सर : लेकिन सब काम बड़ी सहूलियत से होता चलता है। और हम कुछ बातें हर...क्या नाम है?

मज़दूर : मान।

अनाउन्सर : मान? अच्छा तो हर मान, आपका क्या खयाल है। कारख़ाने में जो बहुत-सी नयी-नयी तरक्क़ियाँ हुई हैं, उनसे आपके साथी मज़दूरों पर कैसा असर पड़ा है?

मज़दूर : यानी?

अनाउन्सर : यानी, आपको इस बात की खुशी है न कि तमाम कलें चलने लगी हैं और सब लोग काम में लगे हुए हैं।

मज़दूर : हाँ।

अनाउन्सर : और इस बात की भी कि हफ़्ते के आख़ीर में हर शख़्स अपनी तनख़्वाह का लिफ़ाफ़ा ले आता है? हमें यह न भूलना चाहिए।

मज़दूर : हाँ।

अनाउन्सर : पहले ऐसा नहीं था। वाइमार प्रजातन्त्र के समय

बहुत से साथियों को भीख के तल्ख़ टुकड़े तोड़ने पड़ते थे और तनख़्वाह भी कितनी कम मिलती थी।

मज़दूर : साढ़े अठारह मार्क और कोई कटौती नहीं।

अनाउन्सर : [बनावटी हँसी हँसकर] हा हा हा! अच्छी मज़ाक़ की बात कही? कटौती के लिए तब था ही क्या!

मज़दूर : अब तो खूब गुंजायश है कटौती की! [**कारख़ाने का अफ़सर आगे बढ़ता है। स्टार्मट्रूपर की वर्दीवाला मोटा आदमी भी।**]

अनाउन्सर : और इस तरह फ्यूरेर के राज्य में सब को नौकरी मिली और सब अपनी रोज़ी कमाने लगे। तुम बिल्कुल ठीक कहते हो...क्या नाम है तुम्हारा! अब कोई कल बेकार नहीं पड़ी है और आडोल्फ़ हिटलर के जर्मनी में किसी आदमी को बेकार नहीं रहना पड़ता। [**वह मज़दूर को माइक्रोफ़ोन से खींचकर अलग करता है।**] दिमाग़ और हाथ से काम करनेवालो, मिलकर अपनी प्यारी जर्मन पितृभूमि के पुनर्निर्माण के लिए आगे बढ़ो। हाइल हिटलर!

□

चुनाव

[**मार्च २६, १६३६ । चुनाव का बड़ा कमरा । दीवार पर रङ्गीन कपड़े की एक बड़ी-सी चौड़ी पट्टी जिस पर लिखा है : "जर्मन राष्ट्र को रहने के लिए जगह चाहिए —आडोल्फ हिटलर ।" स्टार्मट्रुपर चारों तरफ खड़े हैं; चुनाव कमेटी के लोग भी स्टार्मट्रुपरों की वर्दी में हैं । दो स्टार्मट्रुपर एक बुढ़िया और एक चालीस बरस के अंधे आदमी को लेकर आते हैं । वे दोनों फटे-पुराने कपड़े पहने हैं ।**]

—[**बतलाता है**] पिछली लड़ाई में इस वोटर की आँखें नहीं रही थीं ।

[**सब हिटलरी सैलूट के साथ खड़े होते हैं ।**]

सब : हाइल हिटलर !

स्टार्मट्रुपर : [**जो इन लोगों को लाया है**] जेकब केहरर, ३४ रुमर्स-बर्गर ऐली, और उसकी माँ फ्राउ आना केहरर ।

[**दोनों को मतदानपत्र और लिफाफे दिये जाते है ।**]

बुढ़िया : [**पास खड़े हुए नागरिकों से**] इसका मतलब क्या दूसरी लड़ाई है ?

[**कोई जवाब नहीं देता । एक स्टार्मट्रुपर खाँसता है ।**]

चुनाव अध्यक्ष : [**बुढ़िया से**] मुझे इत्मीनान है कि तुम अपने लड़के को बता दोगी कि उसे किस जगह पर सही करना है । [**स्टार्मट्रुपरों की ओर मुड़ते हुए, लेकिन असल उद्देश्य पास खड़े वोटरों को सुनाना है ।**] इस आदमी ने लड़ाई में अपनी आँखें खोयी हैं । मगर उसे

किस जगह सही करना है उसे वह ठीक-ठीक ढूंढ़ लेगा। हमारे बहुत-से देश भाइयों के लिए वह आदर्श हो सकता है। उसने राष्ट्र के भले के लिए खुशी खुशी, हँसते-हँसते अपनी आँखों की बलि चढ़ायी है। और जब एक बार फिर उसका फ्यूरेर उसे आवाज़ देता है तो उसे फिर जर्मनी की इज़्ज़त के लिए वोट करने में रत्ती भर हिचक नहीं होती। अपने राष्ट्र-प्रेम से उसे रुपया-पैसा या जायदाद, कुछ नहीं मिली। यह तो आप उसके कोट को एक बार देख कर ही अच्छी तरह समझ सकते हैं। हमारे उन बहुत से देश भाइयों को जो हरदम भुनभुनाया करते हैं, इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि आख़िर वह कौन-सी ताक़त है जो इस आदमी को वोट देने के लिए खींच-कर लाती है! [**वह बुढ़िया को वोट डालने की जगह दिखलाता है**] वहाँ जाओ!

[**बुढ़िया हिचकिचाते हुए अपने अंधे बेटे को वोट डालने की जगह पर ले जाती है। फिर एक बार संदेह के कारण रुक जाती है और अपने चारों तरफ़ देखती है। सब स्टार्मट्रूपर उसे घूरते हैं। वह डर जाती है। डरी हुई, पीछे मुड़-मुड़कर देखती हुई वह वोट डालने की जगह पर पहुँचकर अपने अंधे लड़के को अंदर खींच लेती है।**]

दुर्घटना

[मजदूर काम से लौटने पर अपनी पड़ोसिन औरत को वहाँ पाता है ।]

पड़ोसिन : गुडईवनिंग, हर फ़ेन । मैं तुम्हारी बीवी से रोटी उधार लेना चाहती थी, पर वह तो बाहर चली गयी ।

आदमी : मैं तुम्हारी मदद कर सका, इसकी मुझे बड़ी खुशी है, फ्राउ डीज़ । मुझे जो काम मिला है, उसके बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?

पड़ोसिन : हाँ, अब तो सब को काम मिल रहा है । तुम तो मोटर के नये कारखाने में हो न ? बममार बनाने में लगे होगे ?

आदमी : और क्या ।

पड़ोसिन : अब तो स्पेन में उनकी ज़रूरत है ।

आदमी : खाली स्पेन ही क्यों ?

पड़ोसिन : क्या-क्या चीज़ें दी जा रही हैं, इसकी अजब-अजब बातें सुनी जाती हैं । बड़े शर्म की बात है ।

आदमी : ज़रा अपनी ज़बान पर लगाम लगाओ !

पड़ोसिन : अब तुम भी उन्हीं में के हो गये क्या ?

आदमी : मैं किसी का नहीं हूँ । मैं अपना काम करता हूँ । आख़िर मार्था है कहाँ ?

पड़ोसिन : अच्छा हो कि मैं तुम्हें एक बुरी ख़बर सुनने के लिए तैयार कर दूँ । जब मैं यहाँ आयी तब डाकिया यहाँ पर था । उसने तुम्हारी बीवी को एक ख़त दिया जिससे वह बहुत बेचैन हो गयी । मैंने तो फिर शरमन

के यहाँ से रोटी उधार लेने की सोची।

आदमी : सच !] पुकारता है] मार्था !

[उसकी बीवी अन्दर आती है। वह गमी के कपड़े पहने है]

आदमी : क्या हुआ तुम्हें ? कौन मर गया ?

बीवी : फ़ैज़। खत आया है।

[ख़त थमा देती है]

पड़ोसिन : हे परमेश्वर ! क्या हुआ था ?

आदमी : एक दुर्घटना हो गयी।

पड़ोसिन : [सन्देह के स्वर में [वह उसका था न ?

आदमी : हाँ।

पड़ोसिन : और दुर्घटना से उसकी मृत्यु हुई ?

आदमी : हाँ, स्टेटिन में। इसमें लिखा है, फ़ौजी मैदान में रात की प्रैक्टिस के वक्त।

पड़ोसिन : तुम समझते हो दुर्घटना में उसकी जान गयी ? मुझसे तो तुम यह कह नहीं सकते।

आदमी : मैं तुम्हें सिर्फ़ वह बतला रहा हूँ जो इसमें लिखा है। ख़त मैदानी हेडक्वार्टर से आया है।

पड़ोसिन : इधर तुम्हारे पास उसके ख़त आ रहे थे ? स्टेटिन से ?

आदमी : मार्था, इतनी पागल न बनो। इससे कोई फ़ायदा नहीं।

बीवी : [सिसकियाँ भरते हुए] हाँ, यह मैं जानती हूँ।

पड़ोसिन : कितना अच्छा था तुम्हारा भाई। तुम्हारे लिए कॉफ़ी तैयार कर दूँ ?

आदमी : बहुत अच्छा हो अगर कर सको, फ्राउ डीज़ ?

पड़ोसिन : [बर्तन खोजती हुई] ऐसी खबरों से धक्का लगता ही है।

बीवी : तुम नहा-धो लो हरबर्ट। फ्राउ डीज़ इसका कतई बुरा न मानेंगी।

आदमी : इसकी तो कोई ख़ास जल्दी नहीं।

पड़ोसिन : और स्टेटिन से वह तुम्हें बराबर ख़त भेजता रहा ?

आदमी : उसके ख़त हमेशा स्टेटिन से आते थे।

पड़ोसिन : [मतलब भरी निगाहों से] अच्छा, तो यह बात है ! वह भी दक्खिन था ?

आदमी : क्या मतलब दक्खिन ?

पड़ोसिन : दूर दक्खिन ही में तो प्यारा-प्यारा स्पेन है ।

आदमी : [अपनी बीवी को फिर सिसकते देखकर] अपने को काबू में करो, मार्था ! और तुम्हें फ्राउ डीज इस तरह बात न करनी चाहिए ।

पड़ोसिन : मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि तुम जब अपने साले की लाश लाने जाओगे तो वे तुमसे क्या कह देंगे ?

पति : मैं स्टेटिन नहीं जा रहा हूँ ।

पड़ोसिन : ढाँकने-तोपने में वे लोग बड़े उस्ताद हैं । वह इसकी बड़ी शेखी भी मारते हैं कि उनकी कोई बात जनता के कानों तक नहीं पहुँचती । शुल्टहाइस सलून में एक आदमी इस बात की बड़ी शेखी मार रहा था कि देखो, कैसी सफ़ाई से हमने युद्ध की तमाम बातें छुपा ली हैं । जब कोई बममार किसी हवामार तोप की मार में आ जाता है और उसमें बैठे हुए लोग छतरियाँ लेकर कूद पड़ते हैं तो दूसरे बममारों के लोग उन पर मशीनगनों से गोलियाँ बरसाते हैं । हाँ, वे अपने ही आदमियों को गोलियों से मारते हैं जिसमें वे लाल सैनिकों को यह न बता पायें कि वे किस मुल्क के हैं ।

पत्नी : [जिसकी तबीयत भीतर ही भीतर बिगड़ती जा रही है ।] मुझे ज़रा पानी पिलाओ हरबर्ट । मेरी तबीयत न जाने कैसी हो रही है ।

पड़ोसिन : तुम यों ही काफ़ी उत्तेजित हो, तुम्हें और उत्तेजित करना मेरा उद्देश्य नहीं था । लेकिन देखो, कैसी खूबी से वे तमाम बातों पर पर्दा डाले रहते हैं ! वे यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि वे जुर्म कर रहे हैं और उन्हें अपने युद्ध को अँधेरे में ढँककर ही रखना है । यहाँ भी वही बात है । प्रैक्टिस के लिए की गयी उड़ान में मरा ! जानते हो काहे की प्रैक्टिस कर रहे हैं वे ? युद्ध की, युद्ध की !

पति : इतनी ज़ोर से तो न बोलो खुदा के वास्ते [पत्नी से] तबीयत सँभली कुछ ?

पड़ोसिन : तुम भी उन्हीं में से हो जो हर बात में मुँह सिये रहते हैं। इसी का इनाम आया है उस ख़त में।

पति : अब बन्द करो यह !

पत्नी : हरबर्ट !

पड़ोसिन : तुम मुझे चुप रहने को इसीलिए न कहते हो कि अब तुम्हें नौकरी मिल गयी है। पर तुम्हारे साले की भी तो नौकरी लग गयी थी पर तुम जो चीज़ें अपने मोटर के कारख़ाने में बनाते हो, उन्हीं में से एक से तो उसका हादसा हो गया।

पति : अब तुम बहुत आगे बढ़ी जा रही हो फ़ाउ डीज़। मैं वह चीज़ बनाता हूँ ! दूसरे क्या बनाते हैं, आख़िर ज़रा यह भी तो सुनूँ ? तुम्हारा आदमी क्या बनाता है ? क्यों ? वह शायद लड़ाई के लिए नहीं है ! वह तो सिर्फ़ रोशनी करने के लिए है। उससे क्या रौशन करते हैं वह ? टैंक या जहाज़ शायद या शायद वैसा ही एक बममार, लेकिन वह तो सिर्फ़ बल्ब बनाता है। या ख़ुदा। ऐसी भी कोई चीज़ है जो लड़ाई के काम न आती हो ? मुझे नौकरी कहाँ मिलेगी अगर मैं हरदम यही सुमिरनी जपा करूँ — लड़ाई के काम में नहीं ! भूखों मरूँ ?

पड़ोसिन : [विराम] मैं तुम्हें भूखों मरने को तो कहती नहीं। तुम्हें नौकरी ज़रूर करनी चाहिए। मैं तो सिर्फ़ उन मुजरिमों की बात कह रही थी, यह अच्छा काम दिया उन्होंने तुम्हें !

पति : [गम्भीर स्वर में] मार्था, तुम्हें ये तमाम काले-काले मातमी कपड़े न पहनने चाहिए। उन्हें यह पसन्द नहीं।

पड़ोसिन : उन्हें लोगों का सवाल करना भी पसन्द नहीं।

पत्नी : [शान्ति से] तुम्हारा क्या मतलब, मैं ये कपड़े उतार डालूँ ?

पति : हाँ, नहीं यह नौकरी भी हाथ से जायगी।

पत्नी : मैं नहीं उतारूँगी।

पति : यानी !

पत्नी : मैं नहीं उतारूँगी। मेरा भाई मर गया है। मैं उसका मातम कर रही हूँ।

पति : माँ के मरने में अगर रोज ने इसे खरीदा न होता और तुम्हारे पास यह चीज न होती तो तुम मातम करना चाहतीं भी तो न कर पातीं।

पत्नी : [**चीखते हुए**] कोई मुझे मातम करने से नहीं रोक सकता ! वह अगर उसे क़त्ल कर डालते हैं तो मुझे कम से कम रोने की आजादी तो हो ! ऐसा तो कहीं देखा ही नहीं। ऐसी बर्बर चीज़ दुनिया में कभी देखी ही नहीं गयी। इनसे खूनी मुजरिम और नहीं !

पड़ोसिन : [**पति मौन है**] मगर फ्राउ फ़ेन !

पति : [**फटी-सी आवाज में**] अगर तुम इस तरह बात करोगी तो हमारी और भी दुर्गत होगी, सिर्फ़ नौकरी ही से हाथ न धोना पड़ेगा।

पत्नी : वे आवें और मुझे पकड़ लें। औरतों के लिए भी तो कंसेंट्रेशन कैम्प बनाये हैं उन्होंने। उनका मन हो तो मुझे ठूँस दें उसमें क्योंकि मैं इसको भूल नहीं सकती कि उन्होंने उसे मार डाला है। स्पेन में उसकी क्या ज़रूरत थी भला ?

पति : स्पेन की बात मत करो।

पड़ोसिन : अपनी बात से ही तुम मुसीबत में फँस जाओगी फ्राउ फ़ेन !

पत्नी : हम अपना मुँह सिये रहें, क्योंकि तुम्हारी नौकरी छूट जायगी। मगर हम ऐसा न करेंगे, क्यों ? क्योंकि हम भूखों मर जायेंगे अगर उनके लिए बममार तैयार न करें ! जो हो मरना तो हमें है ही, फ़ेज की तरह। उन्होंने उसे भी तो जगह दी। जमीन के नीचे छः फ़ीट। उतनी जगह तो उसे यहाँ भी मिल सकती थी !

पति : [**उसका मुंह बन्द करने की कोशिश करता है**] खामोश, समझीं ? इससे कुछ न होगा।

पत्नी : तो किससे होगा ? ऐसा कुछ करो जिससे हो !

•

ख़ैराती अस्पताल

[ख़ैराती अस्पताल का एक वार्ड। एक नया मरीज़ लाया गया है। एक नर्स मरीज़ के बिस्तरे के सिरे पर रक्खी हुई स्लेट में उसका नाम लिखती है। पास के बिस्तरे पर दो मरीज़ आपस में बात कर रहे हैं।]

पहला मरीज़ : यह कैसा आदमी है ?

दूसरा मरीज़ : मैंने इसे पहले भी देखा था—चीरफाड़वाले कमरे में जहाँ पट्टियाँ वग़ैर बाँधी जाती हैं। मैं उसके स्ट्रेचर के पास ही बैठा हुआ था। मैंने उससे सवाल किया तो उसने कोई जवाब नहीं दिया, गो तब वह होश में था। उसका सारा शरीर ही जैसे एक बड़ा घाव हो…

पहला मरीज़ : तो तुमने उससे पूछा नहीं इसके बारे में ?

दूसरा मरीज़ : कैसे पूछता। मैंने घाव को उस समय देखा न जब उस पर पट्टी बाँधी जाने लगी।

एक नर्स : चुप हो जाओ, प्रोफ़ेसर आ रहे हैं।

[सर्जन कमरे में दाखिल होता है। उसके पीछे पीछे विद्यार्थी और नर्सें आती हैं। वह एक बिस्तर के पास पहुँच कर रुक जाता है और एक छोटा-मोटा भाषण दे डालता है।]

सर्जन : यहाँ पर यह एक बहुत अच्छा केस है जिसे देखने से यह साबित होता है कि बीमारी के भीतरी कारणों को हर वक्त जानने और खोजने में न लगे रहने से डाक्टरी डाक्टरी न रहकर झाड़-फूँक हो जाती है। इस मरीज़ के तमाम लक्षण न्यूरैलजिया के हैं और

इसी आधार पर बहुत दिनों तक उसका इलाज भी हुआ। मगर सच बात यह है कि उसे रेनोज़ डिज़ीज़ है जो उसे दबाई हुई हवा की मशीनों पर काम करने से लग गयी। दूसरे शब्दों में, यह रोग उसे अपने काम की वजह से लगा है। और अब जाकर कहीं उसे ठीक इलाज मिला है। यह मरीज़ इस बात का प्रमाण है कि किसी मरीज़ को केवल एक मरीज़ समझना कितना ग़लत है। उसके बारे में यह सवाल भी पूछना चाहिए कि यह मरीज़ कहाँ का है, उसे यह रोग कहाँ लगा, इलाज के बाद वह कहाँ जायगा। अच्छे डाक्टर को कौन-कौन सी बातें ज़रूर जानना चाहिए? पहली बात?

पहला विद्यार्थी : सवाल करना।

सर्जन : दूसरी बात?

दूसरा विद्यार्थी : सवाल करना।

सर्जन : तीसरी बात?

तीसरा विद्यार्थी : सवाल करना, प्रोफ़ेसर साहब।

सर्जन : ठीक, सवाल करना। और ख़ास तौर पर...

तीसरा विद्यार्थी : सामाजिक परिस्थितियों के बारे में, प्रोफ़ेसर!

सर्जन : अपने मरीज़ के निजी जीवन को समझने से कभी न डरना चाहिए गो हमारा दुर्भाग्य है कि अच्छी बातें उसमें हमें शायद ही कहीं मिलें। अगर किसी आदमी को मजबूर होकर ऐसा पेशा अख़्तियार करना पड़ता है जो उसकी तन्दुरुस्ती को तुरंत या कुछ दिन बाद चौपट कर देगा, तो हमें कहना पड़ेगा कि वह भूख से बचने के लिए मरा — यह बात सुनने में बुरी मालूम होती है, इसीलिए पूछने में भी बुरी मालूम होती है।

[वह नये मरीज़ के पास आता है। विद्यार्थी और नर्सें पीछे पीछे हैं।]

सर्जन : इसे क्या बीमारी है?

[हेड नर्स उसके कान में कुछ फुसफुसाती है।]

सर्जन : ओह!...समझा...

[वह अनमने ढंग से मरीज़ की परीक्षा करता है ।]

सर्जन : [लिखता है] पीठ और जाँघों पर छिलने का निशान । पेड़ू में खुला घाव । उसकी हालत के बारे में और कोई बात ?

हेड नर्स : [पढ़ती है] पेशाब में खून जाता है ।

सर्जन : अस्पताल में दाखिल होने पर उसका निदान क्या हुआ था ?

हेड नर्स : बायाँ गुर्दा फटा हुआ ।

सर्जन : उसका एक्सरे करना होगा ।

[चलने को मुड़ता है ।]

तीसराविद्यार्थी : [जो मरीज़ का हाल लिख रहा है] रोग का कारण प्रोफ़ेसर ?

हेड नर्स : इसमें 'सीढ़ी से गिरना' रोग का कारण बताया गया है ।

सर्जन : [लिखवाता है] सीढ़ी से गिरना । उसके हाथ बिस्तर से क्यों बँधे हुए हैं ?

हेड नर्स : मरीज़ दो बार अपनी पट्टियाँ नोचकर फेंक चुका है प्रोफ़ेसर !

सर्जन : क्यों ?

पहलाविद्यार्थी : [धीमी आवाज़ में] मरीज़ कहाँ से आया है और वापस कहाँ जायगा ?

[सबके सिर उसकी ओर मुड़ जाते हैं ।]

सर्जन : [गला साफ़ करते हुए] मरीज़ को बेचैनी की हालत में मॉर्फ़िया देना । [दूसरे बिस्तर के पास पहुँच जाता है ।] क्यों ? तबियत अच्छी है ? घबराओ मत, जल्दी ही तुम्हारी ताकत लौट आयेगी ।

[मरीज़ के गले की परीक्षा करता है ।]

एक विद्यार्थी : [दूसरे विद्यार्थी से] मज़दूर । ओरैनियनबुर्ग[1] से यहाँ भेजा गया है ।

दूसरा विद्यार्थी : [ताने के लहजे में] इसे किसी दूसरे पेशे से रोग लगा है शायद !

---

1. नात्सी जर्मनी का एक बहुत बदनाम कंसेन्ट्रेशन कैम्प ।—अनु०

मूल-सुधार

[वुर्टेमबर्ग के एक कस्बे का चौक जिसमें छोटी-छोटी कुछ दूकानें हैं। मञ्च के पीछे की तरफ एक गोश्त की और आगे की तरफ दूध की दूकान है। जाड़े को सुबह है, अँधेरा छाया हुआ है। गोश्त की दूकान तो अब भी बन्द है मगर दूध की दूकान में रोशनी है और कुछ गाहक बाहर खड़े इन्तजार कर रहे हैं।]

गरीब नागरिक : आज फिर न होगा मक्खन, मेरी समझ में !

औरत : अपने मर्दुए की कमाई से जो पाव-आध पाव मैं ख़रीद सकती हूँ, उतना तो कम से कम होना ही चाहिए।

नौजवान : बन्द करो यह भुनभुनाना, समझे तुम लोग ! जर्मनी को तोपों की जरूरत है, मक्खन की नहीं,— यह तुम अच्छी तरह जान लो। उन्होंने यह बात बहुत साफ़ तौर पर कह दी है।

औरत : [डरती हुई] और ठीक भी तो है।

[खामोशी]

नौजवान : राइनलैंड पर कब्ज़ा हम लोग मक्खन से कर सकते थे भला ? जब यह शानदार चीज़ हुई तब तो सब उसके साथ थे, लेकिन जब उसके लिए कुछ कुर्बानी करने को कहा जाता है तो सबकी नानी मरती है।

दूसरी औरत : इतना गरम मत पड़ो। हम सभी कुर्बानियाँ कर रहे हैं।

नौजवान : [अविश्वासपूर्वक] ज़रा मैं भी तो सुनूँ !

दूसरी औरत : [पहली औरत से] वे जब चन्दा माँगने आते हैं तो

तुम कुछ नहीं देतीं क्या ?

[पहली औरत सिर हिला कर हामी भरती है।]

दूसरी औरत : देखा ? वह भी देती है, और हम भी देते हैं, अपनी ख़ुशी से।

नौजवान : मैं ये सब लटके खूब समझता हूँ। फ्यूरेर को जब अपने बड़े-बड़े कामों के लिए ढेर से पैसों की ज़रूरत होती है, उस वक्त भी सब एक-एक फ़ेनिंग को दाँत से पकड़ते हैं। जाड़े की सहायता के लिए सिवाय फटे चीथड़ों के और कुछ जैसे उनके हाथ से छूटता ही नहीं। उनका बस चले तो सुअर की तरह चिल्लायें जिसमें कोई समझे कि यह घर नहीं सुअर का बाड़ा है। लेकिन हमारे पास सबके नम्बर हैं। वह मोटा व्योपारी जो नम्बर ग्यारह में रहता है, उसने तो सचमुच हमें एक जोड़ा घुड़सवारी के जूते दिये थे और सो भी फटे हुए।

गरीब नागरिक : कुछ लोग काफी चौकन्ने नहीं रहते !

[दूध की दूकानवाली औरत अन्दर से एक सफेद एप्रन पहने निकलती है।]

दूकानवाली औरत : अब एक मिनट में सब ठीक हो जायगा। [दूसरी औरत से] सुबह मुबारक, फ्राउ रूल। तुमने सुना कुछ ? कल रात को वे उस लड़के लेटनर को यहीं बग़ल के घर से ले गये।

दूसरी औरत : वही गोश्तवाला ?

दूकानवाली : हाँ उसी का लड़का।

दूसरी औरत : लेकिन वह तो एस० ए०[1] का मेंबर था न ?

दूकानवाली : था तो और उसका बाप तो सन् २९ से ही पार्टी[2] में है। कल संयोग से वह जानवरों के नीलाम के सिलसिले में शहर से बाहर था, नहीं तो वे उसे भी पकड़ ले जाते।

---

[1] नात्सियों का एक सैनिक-संगठन।

[2] नात्सी पार्टी।

दूसरी औरत : उन्होंने जुर्म क्या किया था ?

दूकानवाली : गोश्त की क़ीमत चढ़ा दी थी। इधर काफ़ी दिनों से उसे कहीं कुछ मिलता तो था नहीं। नतीजा हुआ कि उसके गाहक टूट-टूटकर दूसरी दूकानों पर जाने लगे। फिर वह क्या करता, उसने चोरी का गोश्त ख़रीदना शुरू किया। और सो भी, सुना है, यहूदियों से।

नौजवान : तुम चाहती हो इतने पर भी वे उसे न पकड़ते ?

दूकानवाली : वह हमेशा सबसे जोशीले लोगों में था। तुम नम्बर सत्रहवाले उस बुड्ढे ज़ाइस्लर को जानती हो ? उसने ज़ाइस्लर को पकड़वा दिया क्योंकि वह फ़ोलकिशर बियोबाख़्तर[1] नहीं खरीदता था। वह बहुत सी लड़ाइयाँ देखे हुए आदमी है।

दूसरी औरत : उसे सचमुच बड़ा ताज्जुब मालूम होगा लौट के आने पर।

गरीब नागरिक : कुछ लोग सचमुच काफ़ी चौकन्ने नहीं रहते।

दूसरी औरत : लगता है उनकी दूकान आज न खुलेगी।

दूकानवाली : यही तो चाहिए! पुलिसवाले एक बार अन्दर-बाहर से अच्छी तरह देख भर लें, फिर तो उनका कुछ न कुछ खुचड़ लगा ही रहता है। लगा रहता है न ? और उस पर से दुनिया का यह हाल कि ज़मीन-आसमान एक कर देने पर चीज़ मिलती है। हमें तो अपनी चीज़ें कोआपरेटिव से मिल जाती हैं : अबतक तो कोई मुशकिल आयी नहीं है। [ज़ोर से आवाज़ लगाती है] क्रीम आज नहीं है! [भीड़ में असंतोष] शायद लेटनर का भी रेहननामा इस मकान पर है। उन्हें शायद यह उम्मीद थी कि रेहननामा कट जायगा, या परमात्मा जाने क्या!

गरीब नागरिक : रेहननामा तो वे काट नहीं सकते। यह तो बड़ी ज़्यादती होगी।

दूसरी औरत : लेटनर का लड़का बड़ा अच्छा आदमी था।

---

1. नात्सी पार्टी का मुखपत्र।

दूकानवाली : वही बुड्ढा लेटनर हमेशा से जोश के मारे अंधा था। उसने ठेलठेल कर अपने लड़के को एस० ए० में भेजा। और रहा लड़का, उसे तो उसकी ज़्यादा परवाह थी नहीं, वह तो किसी लड़की को लेकर निकल जाना ही ज़्यादा पसंद करता।

नौजवान : जोश के मारे अन्धा से तुम्हारा क्या मतलब ! हाँ, यह जरूर है कि पहले जब कोई हमारे आदर्श पर चोट करता तो वह गुस्से से पागल हो जाता था। वह हमेशा आदर्श को व्यक्ति से ऊँचा रखता था।

गरीब नागरिक : आख़िरकार दूकान खुल रही है।

दूसरी औरत : उन्हें भी अपना पेट पालना है न ?

[**गोश्त की दूकान में से, जिसमें अब रोशनी हो रही है एक मोटी औरत बाहर आ जाती है। वह पटरी पर खड़ी होकर सड़क पर आँखें दौड़ाती है। फिर दूध की दूकानवाली की ओर मुड़ती है।**]

गोश्तवाली : सुबह मुबारक, फ्राउ श्लिख़्तर। तुमने मेरे बेटे रिचर्ड को देखा ? उसे तो अब तक गोश्त लेकर आ जाना चाहिए था।

[**दूधवाली कोई जवाब नहीं देती। सब लोग गोश्त-वाली को घूरते हैं। वह समझ जाती है और तुरंत दूकान के अन्दर चली जाती है।**]

दूधवाली : यों बात करती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। यह गड़बड़ शुरू तो हुई थी परसों जब बुड्ढे ने इस क़दर हल्ला मचाया था कि तमाम बाज़ार में उसकी आवाज़ गूँज रही थी। उन्होंने उसके ऊपर यह जुर्म लगाया होगा।

दूसरी औरत : मैंने तो इसके बारे में कुछ नहीं सुना, फ्राउ श्लिख़्तर।

दूधवाली : सच ! तो क्या तुम्हें यह नहीं मालूम था कि उसने अपनी दूकान की शो विंडो में गोश्त का पुतला टाँगने से इन्कार कर दिया था ? पहले तो उसने उन्हें मँगाया, क्योंकि एक हफ़्ते तक उसके शो-केस में सिवाय निर्ख़नामे के और कुछ था ही नहीं। वैसी

हालत में उसे मजबूर होकर मँगाना पड़ा। उसने गाहकों से कहा—शो विंडो में लगाने के लिए मेरे पास गोश्त नहीं। और जब वह नकली गोश्त के पुतले आये तो उनमें एक सुअर के बच्चे का भी पुतला था, ऐसी खूबसूरत नकल थी कि क्या बताऊँ। फिर उसने चिल्लपों मचानी शुरू की कि मैं अपनी विंडो में इन पुतलों को टाँगकर अपने गाहकों को धोखे में न डालूँगा। और ऐसी ही पचासों बातें जिन्हें दुहराना ठीक नहीं।...और फिर सब सरकार के खिलाफ़। उसने तमाम चीज़ें उठाकर सड़क पर फेंक दीं। धूल में से उन्होंने उठाया फिर सब।

दूसरी औरत : च् च् च् च्......

गरीब नागरिक : कुछ लोग सचमुच काफ़ी चौकन्ने नहीं रहते!

दूसरी औरत : लोग इतने कायर कैसे हो जाते हैं?

दूधवाली : और सच पूछो तो अपने को बहुत समझदार लगानेवाले ही सबसे पहले जाते हैं!

[**इसी वक्त गोश्त की दूकान में एक रोशनी और जल उठती है।**]

दूधवाली : वह देखो!

[**वह उद्विग्न होकर शो विंडो की ओर इशारा करती है जिसमें अभी पूरी तरह रोशनी नहीं हुई है।**]

दूसरी औरत : शो विंडो में है कुछ!

दूधवाली : अरे, यह वही बुड्ढा लेटनर है! ओवरकोट पहने है! लेकिन खड़ा किस चीज़ पर है? [**यकायक चीख पड़ती है।**] फ्राउ लेटनर!

गोश्तवाली : [**दूकान में से बाहर आती है**] क्या है?

[**दूधवाली बिना कुछ बोले शो विंडो की ओर इशारा करती है। गोश्तवाली उसे एक नजर देखती है, चिल्ला पड़ती है और बेहोश हो जाती है। दूसरी औरत और दूध की दूकानवाली उसके पास दौड़कर जाती है।**]

दूसरी औरत : [**गर्दन पीछे मोड़ कर**] उसने शो विंडो में अपने आपको फाँसी लगा ली है!

गरीब नागरिक : उस पर एक तख़्ती लटक रही है।

पहली औरत : वह निर्खनामा है। उस पर कुछ लिखा है।

दूसरी औरत : लिखा है : मैंने हिटलर को वोट दिया था।

